शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

समकालीन हिन्दी कहानियों की भाषिक संरचना

डॉ0 प्रियदर्शिनी

असिस्टेन्ट प्राफेसर, हिन्दी एवं भारत अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं भाज़ा विष्ठवविद्यालय, हैदराबाद

www.shodh.net

समकालीन हिन्दी कहानियों की भाषिक संरचना

विषय संकेतः- *समकालीन हिन्दी कहानी, कहानी भाषा-शिल्प*

प्रत्येक कथाकार अपनी अभिव्यक्ति के लिए समकालीन मुहावरों में अपनी कथाभाषा आविष्कृत करता है। कथाभाषा की इस क्षमता के बल पर साहित्य समाज का दर्पण बन पाता है। प्रस्तुत शोध आलेख समकालीन कहानी के वैविध्यपूर्ण भाषा संरचना और उसके अभिव्यक्ति की ताकत को अन्वेषित एवं समीक्षित करने का प्रयत्न किया गया है।

भाषा सरंचना एवं शिल्पविधि के स्तर पर समकालीन कहानियों की विशिष्ट पहचान रही है। भाषा का वैविध्यपूर्ण संसार अपने विविध रंगों एवं अभिव्यक्तियों के नाना कौशलपूर्ण प्रयुक्तियों के साथ समकालीन कहनियों में उपस्थित है। यहाँ तक कि किंचित भाषिक विच्युतियाँ भी समकालीन कहानी के रचना संसार को उसका अपना वैशिष्ट्य प्रदान करती है। जीवन के अनेक रंगों के चित्रण की माँग के साथ-साथ समकालीन कहानी में नई भंगिमा एवं नयी ताजगी का समोवश दिखाई देता है।

भाषा प्रयोग की नव्यता समकालीन कहानियों का एक प्रमुख उपलक्षण है। इसी के आधार पर समकालीन कहानी आज की जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों से पाठक का तादात्म्य करा पाने में सक्षम है। असल में मूल्यों और शाश्वतता के टूटते- बिखरते क्षणों में समकालीन कहानी को उसी के अनुरूप भाषा एवं शिल्प को अपनाना ही था। इसकी एक झलक 'शेष होते हुए' नामक कहानी में देखी जा सकती है। ज्ञानरंजन पिता के मन-संसार के चित्रण के लिए इन शब्दों का प्रयोग करते हैं- 'पिता हद से गुजरा हुआ लग रहे हैं, पहले वह मोढ़े पर बैठे-बैठे सहते रहे। अब उठ गए। इस कमरे से उस कमरे, उस कमरे से उस बरामदे, बरामदे से आँगन में वापस मोढ़े पर।''[1]

स्थितियों से प्रसूत दशाओं के कारण ही समकालीन हिन्दी कहानी में गद्य की कथ्यक्षमता और सम्प्रेषणीयता का अपूर्व विकास दृष्टिगोचर होता है। सभी कथाकारों ने अपने-अपने ढंग से भाषा में कथ्यक्षमता, सम्प्रेषणीयता तथा प्रभावान्विति में अभिवृद्धि की है और समकालीन यथार्थ के चित्रण का प्रयास किया है।

समकालीन कहानीकारों ने अपने को भावुकता तथा रोमानी भाषा के संस्कार से बहुत हद तक मुक्त रखा है। इसकी जगह यथार्थ के खुरदुरे रूप का वर्णन किया है। प्रेम और सौंदर्य के चित्रण में दीप्ति खंडेलवाल की कहानी 'यह भी कोई गीत है' का उदाहरण द्रष्टव्य है- ''कविता से जुड़ती बात कमीज पर आकर टूट जाती है और आलिंगनबद्ध भुजाओं के बीच अनाम दूरियाँ फैल जाती हैं।''[2] समकालीन हिन्दी कहानी में व्यंग्य के माध्यम से भ्रष्ट और घिनौनी व्यवस्था तथा सड़ी-गली रूढ़ियों पर गहरा आघात किया गया है। श्रीराम वर्मा की कहानी 'मकान की यात्रा' में भाषा का व्यंग्यात्मक रूप दर्शनीय है- 'लड़की तो भगवान ने दी, नौकरी सोर्स ने। बिना सोर्स हनुमान जी भी पुट्ठे पर हाथ नहीं रखने देते। ..... हर जगह सोर्स के नाम पर एक हनुमान जी की जरूरत पड़ती है।''[3]

समकालीन कहानी की भाषा जीवन के अत्यन्त निकट होने के कारण अत्यन्त सरल व सहज प्रतीत होती है। स्वदेश दीपक की भाषा में भी बोली की रंगत उसे एक नयी अर्थ क्षमता देती है। उसकी कहानी 'बाल भगवान' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है- ''बीस किल्ले जमीन अपनी और चार लड़कियाँ, सारी की सारी जँवाई ले जाएगें। चिता में आग देने के लिए एक लड़का भी नहीं है, पक्का मकान है, साले जँवाई रहेंगे; मौज मारेंगे। खानदान का नाम आगे बढ़ाने के लिए एक लड़का भी नहीं है।''[4] शिवमूर्ति ने भी अपनी कहानी की भाषा में जनभाषा को अपनाकर उसे नयी ताजगी दी है और कहानी जिस जीवंत परिवेश की है शिवमूर्ति ने उसे उसी भाषा में रंगकर, भाषा की सरलता से उसे प्रभावशाली बनाया है। जैसे-''सुनते हैं बिमली का आदमी तीन साल से घर नहीं आया। कलकत्ते से रूपया भी नहीं भेजता बाप के पास। दिहाड़ी मजदूरी करता है गुन का न सहुर का। अगर बिमली की माई बिमली को बिल्ला के साथ विदा कर दें....। राम जानकी की जोड़ी रहेगी दोनों की।''[5] इस देश की न्यायिक व्यवस्था पर करारी चोट करने वाली भाषा का

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

समकालीन हिन्दी कहानियों की भाषिक संरचना

डॉ0 प्रियदर्शिनी

असिस्टेन्ट प्राफेसर, हिन्दी एवं भारत अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं भाज़ा विष्ठवविद्यालय, हैदराबाद

www.shodh.net

रूप देवेन्द्र की कहानी 'क्षमा करो हे वत्स' में कितनी सरलता से किया गया है। उदाहरण द्रष्टव्य है- ''इस देश की न्यायपालिका में प्लेटों के आदर्श राज्य का व्यावहारिक यथार्थ है।''[6] देश की बिगड़ती स्थिति, चारो ओर लूटपाट, और रक्षक के ही भक्षक बनने की स्थिति का बड़ा ही यथार्थ चित्रण राकेश कुमार सिंह ने अपनी कहानी 'नम: अज्ञात' में किया है - 'स्साला..... मादर ..... गाँव की इज्जत ..... भौंसड़ी हरिसचन्दर की औल..... पचीस जगह जाकर गाएगा की सिपाही जी ने लूटपाट किया क्यों करेगा न परचार साले?''[7]

शब्द चयन के प्रति समकालीन कहानी अत्यन्त सचेत है। उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में उर्दू और अंग्रेजी भाषा को अत्यन्त मुक्त भाव से अपनाया है। वस्तुत: उर्दू और अंग्रेजी का प्रयोग भी कहानीकारों ने इस रूप में किया है कि वे शब्द अब उर्दू, अंग्रेजी के नहीं रह गये हैं, अपितु वे जितनी अपनी मूल भाषा में प्रचलन में है, उतनी ही बहुलता से या स्वाभाविकता से उनका प्रयोग हिन्दी बोलने वाला करता है। उर्दू से भी अधिक, आज की कहानी की भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग सामान्य पढ़े-लिखे भारतीय की भाषा का स्वाभाविक अंग बन गया है। अंग्रेजी मिश्रित संवाद का उदाहरण देखिए- ''बेड नं0 सात की पेशेंट का रात बीतते बच्चा हो जाएगा। तीन अंगुल बच्चेदानी का मुँह खुल चुका है? ब्लडप्रेशर और बच्चे की हार्टबीट सामान्य है।''[8]

शिल्प के नये प्रयोग इधर की कहानियों की विशेषता ही नहीं है अपितु उनमें अगली सदी की कहानी की बुनावट का भविष्य दिखायी देता है। कहानियों में शिल्प प्रयोग भले ही न हो, किन्तु इस अर्थ में नये हैं कि कहानीकारों ने जीवन के जटिल यथार्थ को कहानी में अभिव्यक्ति करने के लिए जो पद्धतियाँ विकसित की हैं, वे पूर्व प्रचलित पद्धतियों का विकसित रूप है। शिल्प के स्तर पर आज की कहानी ने नई ऊँचाई हासिल की है। पश्चिम की नयी कथा प्रविधियों का भी सहारा लिया गया है। उदय प्रकाश की 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'वॉरेन हेंस्टिग्स का साँड़' और अंत में प्रार्थना', अखिलेश की 'शापग्रस्त', 'शशांक की 'कोसाफल', मनोज रूपड़ा की 'बीमार सपने', 'प्रिया की पलंग', 'खरगोश', देवेन्द्र की 'शहर कोतवाल की कविता' आदि कहानियाँ कहानी की शिल्पविधि में विविध परिवर्तनों की ओर संकेत करती हैं। उदय प्रकाश की कहानियों में भाषा की रचनाशीलता के नये आयाम दिखते हैं। उनकी कथा भाषा इसका साक्ष्य है कि विविध कथा आंदोलनों के बाद कहानी में लापरवाही नहीं बरती गयी है। वे उन कहानीकारों में से हैं जिन्होंने भाषा के प्रति सजग दृष्टि और रचनाशीलता का अन्वेषण किया है। उदय प्रकाश की कहानियों में भाषा के अनेक स्तर एक दूसरे में पैबस्त मिलते है। भाषा की इतनी विविधता (वैरिएशंस) उनकी पीढ़ी और बाद के कथाकारों में कम मिलेगी। लोककथा, रूपककथा, दास्तान, स्वप्न कथा और रिपोर्ताज जैसी अनेक प्रवृत्तियों वाली भाषिक संरचनाएं उनकी कहानियों में आकर एकात्म हो जाती हैं। उनके इस विशिष्ट भाषा व्यवहार ने हिन्दी आलोचना में जादुई यथार्थवाद की बहस में परवान चढ़ाया। जो नहीं है उसे संभव बनाने का काम भाषा का ही कौशल है। यह कला उदय प्रकाश ने लातीनी अमेरिकी साहित्य से ली हैं या संस्कृत के प्राचीन गल्प से, ये दोनों आग्रह तत्वत: एक हैं। दरअसल, वे कहानी को जिस जमीन से देखते हैं, उस जमीन ने उन्हें यह भाषा दृष्टि दी है। यथार्थ को जादुई रूप से मूर्त करने के पीछे भाषा के विशिष्ट स्वभाव की भूमिका है। 'टेपचू' और 'तिरछी' जैसी कहानियाँ इसके चर्चित उदाहरण हैं।''[9]

'और अन्त में प्रार्थना' कहानी में उदय प्रकाश की कसी हुई धारदार भाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है- 'बी0डी0ओ0, सब ढींगर गाँव में पड़े थे। हर कोई दौड़ रहा था। जनसम्पर्क विभाग और आदिवासी कल्याण परिषद् के अफसर आदिवासी औरतों और मर्दों को सही तरीके से नाचने की ट्रेनिंग दे रहे थे। पी0एम0 के सामने नाचना है, सही नाचोगे तो दिल्ली घुमाएँगे, बख्शीश मिलेगी। आदिवासी औरतों को सख्त हिदायत थी कि कोई ब्लाउज नहीं पहनेगी। ऐसे ही आंचल से दूध को मूंद लेना। जिसकी छाती ज्यादा लटक गयी है, उसको पीछे रहना है। प्रधानमंत्री की यात्रा की तैयारी में ढींगर गाँव टायरों और जूतो के नीचे रौंदा जा रहा था। साठ लाख का खर्चा बैठा था। सब जुटे थे। हर कोई दौड़ रहा था।''[10] उसी प्रकार 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में ऐसे अनेक अंश हैं जिन्हें उद्धृत किया जा सकता है। बाजावादी धुन पर उनकी टिप्पणी में भाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है- ''अभी आठ महीने पहले जनता फ्लैट में रहने वाली, सर गंगाराम हास्पिटल के सफाई कर्मचारी राम औतार आर्य की सत्रह साल की बेटी सुशीला रातोरात मालामाल हो गयी थी, क्योंकि इस विज्ञापन में वह आठ फुट बाई चार फुट साईज के विशाल ब्लेड के माडल पर नंगी सो गयी थी। सुशीला को अपने चेहरे पर उस ब्रांड से होने वाली शेविंग से उपजने वाले चिड़ियों के पर के स्पर्श जैसे सुख और आनंदातिरेक को दस सेकेंड के भीतर ही भीतर करना था। यह काम अपने चेहरे के क्लोज शाट में इतनी निमग्न कुशलता और स्वप्नातीत भावप्रवणता के साथ किया कि देश के सब बड़े चित्रकार ने एक अंग्रेजी अखबार में वक्तव्य दिया था कि वे एक हफ्ते में उस विज्ञापन को डेढ़ सौ बार देख चुके हैं। और आगे आने वाले दो वर्षो तक वे सुशीला के न्यूड्स

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

समकालीन हिन्दी कहानियों की भाषिक संरचना

डॉ0 प्रियदर्शिनी

असिस्टेन्ट प्राफेसर, हिन्दी एवं भारत अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं भाज़ा विष्ठवविद्यालय, हैदराबाद

www.shodh.net

ही बनायेगें।''[11]

उदय प्रकाश की ही भाँति प्रियंवद का कहानी बयां करने का अंदाज बहुत अद्‌भुत है। भाषा की रचनाशीलता का अद्‌भुत उदाहरण उनकी बहुचर्चित कहानी खरगोश में मिलता है- ''मेरे चारों ओर सब कुछ कँपाने वाला जादुई संसार था। तेज हवाएँ, भयानक पानी और आकाश पर कौंधता पीला फूल। धीरे-धीरे मेरी देह शून्य होने लगी, एक बर्फ की नदी उतरने लगी अंदर बारिश की बूंदों से उफनती और गहरी होती। धीरे से आँख बंद कर ली मैंने। एक बिराटता थी चारों ओर अनंत, असीमित। उस महाशून्य में धीरे-धीरे नष्ट हो रहा था। नष्ट हो रही थी मेरी चेतना ..... मैं मेरा स्वयं होना .....। सब कुछ खत्म हो रहा था। बस एक अंधकार था ..... तरल ..... कांपता .....। उस अंधकार में कौंधता एक सफेद टुकड़ा .... एक छोटा खरगोश ....। चमकदार हल्के सुनहरे रोओं वाला जिंदा सास लेता .... नमी उस पर रूकी चांदनी, अभी बारिश की बूँदे ..... कभी धूप। काटता ..... बढ़ता कभी पूरी देह बनता हुआ .... कभी कोई मांस पिण्ड। कभी प्यारी .... कभी पर्वत। नंगा ..... निवर्सन बिल्कुल साक्षात् .... मैं दू सकूँ, चबा सकूँ .... इतनी दूरी पर, मुझे रौंदता ... मुझे चूमता .... काटता एक बंध के गुच्छे में छूबा।''[12] प्रियंवद मनुष्य के भतीर द्वन्द्वों, दबावों और संघातों को भिन्न संदर्भों में रखकर विश्लेषित करते हुए कहानी में एक असाधारण वातावरण रचते हैं, जिससे कहानी का क्षिप्त प्रवाह बनता है।

समकालीन कथाकारों की कथा भाषा को लेकर इधर कुछ आपत्ति उठायी गयी है कि वे कहानी में अपने पात्रों द्वारा या कहानी में प्रसंगवश भाषा बिल्कुल उसी प्रकार प्रयुक्त करते हैं, जैसे कि पात्र कह रहा हो, चाहे वह गाली या अश्लील शब्द ही क्यों न हो। उदाहरण के लिए अखिलेश की कहानी 'असर' को लें। इस कहानी का पात्र छुटभैया नेता चंदप्रकाश के स्वागत कथन (आक्रोश के क्षण) में कहता है - ''सलाहकार साले, तेरी माँ की .... तेरी बहन की .... खुद तो तुम लोग हथियार और पनडुब्बी वगैरह की खरीद में करोड़-करोड़ लील ले जाते हो। डकार ले जाते हो और मुझे एक महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा नहीं मिल सकती।''[14]

भाषा प्रयोग के अनेक ऐसे उदाहरण इधर की कहानियों में मिल जायेंगे। देवेन्द्र ने भी कहानियों में ऐसे गाली-गलौज के शब्दों से परहेज नहीं किया है। कई नये कथाकारों में भाषा के फूहड़ प्रयोग के उदाहरण जब-तब पत्रिकाओं में छपने वाली कहानियों में मिल जायेंगे। कथा-भाषा की यह एक उपलब्धि नहीं नुकसान है, जो पाठक को कांटे की तरह चुभता है। ''आज स्वतंत्रता के नाम पर गाली-गलौज जुगुप्सापूर्ण भाषा को बड़ी निर्भीकता से प्रश्रय दिया जा रहा है। ऐसे प्रयोग की भर्त्सना सामूहिक रूप से, किन्हीं कारणों से नहीं हो रही है, फिर भी पाठकों को यथार्थबोध कराने के लिए अनपेक्षित अथवा अशिष्ट शब्दावली से बचना ही चाहिए। जिससे कि रचना का साहित्यिक स्वरूप बना रहे।''[14] बहरहाल, वर्तमान समय में कहानी की भाषा पर कथाकार श्री लाल शुक्ल के शब्द तर्कसंगत हैं कि कहानियों की भाषा में ''एक समस्या सृजनशीलता की है। आपके सामने चुनौती यह है कि आपके आस-पास जो भाषा बोल जा रहा है, वह अगर आपकी कहानी की भाषा नहीं है, तो उस बात को आप अपनी भाषा में कैसे कह सकते हैं? यह रचनात्मक समस्या है जिसका समाधान लेखक को ही ढूँढ़ना है। लेकिन जिन्हें इस चुनौती का आभास नहीं है वे समाधान कैसे ढूँढे। कुछ रचनाकर तो शार्टकट अपना कर अपने पास की भाषा ज्यों की त्यों रख देते हैं; चाहे वह फूहड़ भाषा बोल रहा हो या अंग्रेजी भाषा बोल रहा हो ..... वास्तव में यह चुनौती है कि उस अश्लील शब्द का प्रयोग न करूँ मगर कोई ऐसी चीज आये जिससे मालूम हो जाये कि अश्लील भाषा का प्रयोग हुआ है .... इसका समाधान रचनाकार को ही खोजना होगा।''[15]

बहरहाल यह कहने में संकोच नहीं है कि नये दौर के कहानीकार भाषा के गठन, बिम्ब, निर्माण, शिल्पविधि व संस्कारशीलता के निर्माण में पूरी तरह से सचेत और सजग रहे हैं। अनेक कहानीकारों की कथा भाषा की चर्चा प्रसंगवश की गयी है। इसके अलावा समकालीन कहानीकारों में से, शशांक, हरि भटनागर, आनंद हर्षुल, नीलाक्षी सिंह, कुणाल सिंह, चंदन पाण्डेय आदि में भी भाषा को संस्कार देने की जद्दोजहद दिखायी देती है। समकालीन कहानी की कथाभाषा की स्थिति को कथाकार ममता कालिया के शब्दों में कहें तो- ''अजीब समय है कि शब्दकोश में शब्द बढ़ रहे हैं, लेकिन भाषा दम तोड़ रही रही है। आज की युवा पीढ़ी हिन्दी में अपनी बात शुरु करती है, अंग्रेजी में खत्म करती है या फिर समस्त शब्दों को ठेंगा दिखा कम्प्यूटर के बटन पर अंगुली दबा देती है। प्रतियोगी परीक्षाओं में वह सिर्फ टिक और क्रास के चिह्नों तक सीमित रहती है। रचनाकार ज्ञानरंजन इसी परिणति को भाषा का बुझता बल्ब मानते हैं।''[16]

अंतत: भाषा की दृष्टि से कहानी को सिर्फ रचना के मूल्यों के लिए संघर्ष नहीं करना है। उसे अपने पाठकों में जन-जीवन से जुड़ी भाषा के प्रति संस्कार पैदा करने की बड़ी जिम्मेदारी निभानी है। समकालीन कहानी अपने वैविध्यपूर्ण भाषा संरचना के माध्यम से इस दायित्व को निभा पाने में सक्षम दिख रही है। समकालीन कहानियों की भाषा इतनी सशक्त है कि वह आज के

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

समकालीन हिन्दी कहानियों की भाषिक संरचना

डॉ0 प्रियदर्शिनी

असिस्टेन्ट प्राफेसर, हिन्दी एवं भारत अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं भाज़ा विष्ठवविद्यालय, हैदराबाद

www.shodh.net

विविध विमर्शों एवं समसामयिक अनुगूजों को अभिव्यक्त कर रही है।

संदर्भ सूची

1.ज्ञानरंजन : 'शेष होते हुए', पृष्ठ - 174
2.दीप्ति खंडेलवाल : 'ये भी कोई गीत है' धर्मयुग, 23 सितम्बर, 1973
3.श्रीराम वर्मा : 'मकान की यात्रा' (कहानी), हंस, जनवरी, 1977
4.स्वदेश दीपक : 'बाल भगवान', पृ0 34
5.शिवमूर्ति : 'तिरिया चरित्तर' हंस-1991, पृष्ठ 44
6.देवेन्द्र : 'क्षमा करो हे वत्स', हंस, सितम्बर-1995, पृ0 66
7.राकेश कुमार सिंह : 'नमः अज्ञात' 'हंस', दिस0, 1995 पृ0 66
8.रमा सिंह : 'पौक मार्क' हंस दिसम्बर-1995, पृ0 54
9.'उद्भावना' (कहानी महाविशेषांक अंक 1-2, संयुक्तांक जनवरी-फरवरी-1996), पृ0 227
10.उदय प्रकाश : 'और अंत में प्रार्थना' (कहानी संग्रह), पृ0 114
11.उदय प्रकाश : 'पॉल गोमरा का स्कूटर', इण्डिया टूडे - 1995, पृ011
12.प्रियंवद : 'खरगोश' (कहानी-संग्रह), पृ0 77-78
13.अखिलेश : 'शापग्रस्त' (कहानी-संग्रह) पृ0 120-121
14.डॉ0 जगन सिंह : (आलेख : समकालीन कहानी की भाषा संरचना, पूर्णांक-146), पृ0 38, 1980
15.श्रीलाल शुक्ल : अविरल मंथन (कथा विशेषांक) जनवरी-मार्च, 1998, पृ0 99 (साक्षात्कार में)
16.ममता कालियाः (आलेख : समकालीन कहानी : भाषा और संवेदना-58, अंक तीन, जुलाई-सितम्बर, 1997, पृ0 69